

॥ वेदसारशिवस्तोत्रम् ॥

.. vedasArashivastotram.h ..

sanskritdocuments.org

September 11, 2017

---

.. vedasArashivastotram.h ..

॥ वेदसारशिवस्तोत्रम् ॥

Sanskrit Document Information



---

Text title : vedasaarashivastotram

File name : vedasarast.itx

Category : shiva, stotra, shankarAchArya

Location : doc\_shiva

Author : Adi Shankaracharya

Transliterated by : Dhruv Chand (DhruvChand at netscape.net)

Proofread by : Sridhar - Seshagiri (seshagir at engineering.sdsu.edu)

Latest update : June 24, 2001

Send corrections to : Sanskrit@cheerful.com

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

September 11, 2017

*sanskritdocuments.org*

---

॥ श्रीः ॥

॥ अथ वेदसारशिवस्तोत्रम् ॥

पशूनां पतिं पापनाशं परेशं  
गजेन्द्रस्य कृत्तिं वसानं वरेण्यम् ।  
जटाजूटमध्ये स्फुरद्वाङ्गवारि  
महादेवमेकं स्मरामि स्मरारिम् ॥ १ ॥

महेशं सुरेशं सुरारातिनाशं  
विभुं विश्वनाथं विभूत्यङ्गभूषम् ।  
विरूपाक्षमिन्द्रर्कवह्नित्रिनेत्रं  
सदानन्दमीडे प्रभुं पञ्चवक्रम् ॥ २ ॥

गिरीशं गणेशं गले नीलवर्णं  
गवेन्द्राधिरूढं गुणातीतरूपम् ।  
भवं भास्वरं भस्मना भूषिताङ्गं  
भवानीकलत्रं भजे पञ्चवक्रम् ॥ ३ ॥

शिवाकान्त शंभो शशाङ्गार्धमौले  
महेशान शूलिञ्जटाजूटधारिन् ।  
त्वमेको जगद्धापको विश्वरूपः  
प्रसीद प्रसीद प्रभो पूर्णरूप ॥ ४ ॥

परात्मानमेकं जगद्धीजमाद्यं  
निरीहं निराकारमोंकारवेद्यम् ।  
यतो जायते पाल्यते येन विश्वं  
तमीशं भजे लीयते यत्र विश्वम् ॥ ५ ॥

न भूमिर्न चापो न वह्निर्न वायु-  
र्न चाकाशमास्ते न तन्द्रा न निद्रा ।  
न चोष्णं न शीतं न देशो न वेषो  
न यस्यास्ति मूर्तिस्त्रिमूर्तिं तमीडे ॥ ६ ॥

अजं शाश्वतं कारणं कारणानां  
शिवं केवलं भासकं भासकानाम् ।

तुरीयं तमः पारमाद्यन्तहीनं  
प्रपद्ये परं पावनं द्वैतहीनम् ॥ ७ ॥  
नमस्ते नमस्ते विभो विश्वमूर्ते  
नमस्ते नमस्ते चिदानन्दमूर्ते ।  
नमस्ते नमस्ते तपोयोगगम्य  
नमस्ते नमस्ते श्रुतिज्ञानगम्य ॥ ८ ॥  
प्रभो शूलपाणे विभो विश्वनाथ  
महादेव शंभो महेश त्रिनेत्र ।  
शिवाकान्त शान्त स्मरारे पुरारे  
त्वदन्यो वरेण्यो न मान्यो न गण्यः ॥ ९ ॥  
शंभो महेश करुणामय शूलपाणे  
गौरीपते पशुपते पशुपाशनाशिन् ।  
काशीपते करुणया जगदेतदेक-  
स्त्वंहंसि पासि विदधासि महेश्वरोऽसि ॥ १० ॥  
त्वत्तो जगद्भवति देव भव स्मरारे  
त्वय्येव तिष्ठति जगन्मृड विश्वनाथ ।  
त्वय्येव गच्छति लयं जगदेतदीश  
लिङ्गात्मके हर चराचरविश्वरूपिन् ॥ ११ ॥  
इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यस्य  
श्रीगोविन्दभगवत्पूज्यपादशिष्यस्य  
श्रीमच्छंकरभगवतः कृतौ  
वेदसारशिवस्तोत्रं संपूर्णम् ।

---

Encoded by Dhruv Chand DhruvChand@netscape.net  
Proofread by Sridhar - Seshagiri (seshagiri at engineering.sdsu.edu)

---

---

Searchable pdf was typeset using generateactualtext feature of Xe<sub>La</sub>TeX 0.99996

on September 11, 2017



Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

